مارچ ۲۰۱۵ء

ماہنامہ **شعاعِ عمل** لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالىٰ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



السلام علیک یا سجاد (ع)

السلام علیک یا اولاد رسول اللہ

نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳



R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 20/-

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

MARCH 2015

A PICTURE OF ASIFI IMAMBARA & OLD LUCKNOW





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

मार्च 2015 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 11 — अंक 9

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

अध्यक्ष प्रचार प्रसार

माननीय **नवाब रज़ा** साहब, भोपाल

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी, इमरान आग़ा, समद अब्बास

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रकः सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ0 प्र0) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ0 प्र0) से प्रकाशित।
सम्पादकः सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

Per Copy 20/- Annual 200/-

lEiknu lfefr

- डॉ0 अमानत हुसैन नक़वी
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- मौलाना महदी रज़ा, घोसी, मऊ
- मौलाना फ़ैज़ान जाफ़र अली
- शाहिद अली आज़मी
- नसीर हुसैन जलालपूरी
- अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- डॉ0 आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- tequ+gcsfj tehc;ulsdQ+ebZ
- bjQku gSj] Ç;ulsdQ+e/;çns'k
- dQ+rdhuudefh] Ç;ulsdQ+ngyh

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

dfiZ vkdu

1– एक साल के लिए 200/-
2– पांच साल के लिए 800/-
3– लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

विषय सूची

elpZ 2015 bZ0

जमादिउल अव्वलः 1436 हि0

FORM-IV
(See Rule No-8)

1. Place of Publication:	Noorehidayat Foundation Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
2. Periodicity:	Monthly
3. Printer's Name:	Syed Mustafa Husain Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	Imambara Ghufranmab, Maulana Kalbe Husain Road Chowk, Lucknow (U.P.)
4. Publisher's Name:	Syed Mustafa Husain Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	Imambara Ghufranmab, Maulana Kalbe Husain Road Chowk, Lucknow (U.P.)
5. Editor's Name:	Syed Mustafa Husain Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Local Address:	Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
Permanent Address:	Imambara Ghufranmab, Maulana Kalbe Husain Road Chowk, Lucknow (U.P.)
6. Owner's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow

I Syed Mustafa Husain Naqvi, hereby declare that the particulars given are true and correct to the best of my knowledge and belief.

Lucknow — Syed Mustafa Husain Naqvi
Date: 01-03-2015 — Printer and Publisher

वहाबी मत का सत्य

ys[kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

fd'r %¼6½ **lEiknu %**नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इतिहास में मिलता है कि जब वर्षा होने लगी तो लोग अपने हाथ उनके शरीर से स्पर्श करके अपने चेहरे पर फेरने लगे और कहते थे मुबारक हो आपको ए हरमैन (दो पुण्य स्थान/मक्का और मदीना) को पानी से अधाने वाले। क्योंकि जनाबे अब्बास इस्लाम आने के भी पहले से और इस्लाम आने के बाद भी साक़ी उल हजीज (हाजियों को पानी पिलाने वाले) थे अर्थात मक्के के हाजियों को पानी पिलाने की प्रबन्ध आपकी ज़िम्मेदारी थी। इसी प्रकार खुदा के हरम (पुण्य स्थल, व मक्का मुअज़्ज़मा) के लोगों को पानी पिलाना उनका काम था और आज वह इस वर्षा द्वारा रसूल के हरम अर्थात् मदीने के वासियों को भी पानी पिलाने वाले हो गए इस वजह से लोग उन्हें "साक़ी उलहरमैन" कह रहे थे। मगर किसी ने उन लोगों का मुँह बन्द नहीं किया कि यह शिर्क !! इसको इब्ने असीर जज़री ने 'उसदुलग़ाबा' में लिखा है और इस बारे में हस्सान बिन साबित ने शेर कहे जिनमें है कि "लागों ने सूखे की कठिनाई में प्रश्न (याचन) किया तो अब्बास के मुख के माध्यम से बादल ने वर्षा से प्यास बुझायी।" इस शेर में तवस्सुल भी है और पानी के अधाने का सम्बन्ध अल्लाह की ओर नहीं है बल्कि बादल की ओर है जो कि वहाबियों के निकट कुफ़्र है।

(फिर कहा है) "इनकी वजह से अल्लाह ने इस नगर को जीवित कर दिया और चारों ओर हरियाली दिखाई देने लगी। एक रिवायत में जनाब ईब्ने अब्बास की ज़बानी है कि हज़रत उमर ने कहा– "पालनहार! हम तुझसे अपने पैग़म्बर के चचा का वास्ता देकर वर्षा मांगते हैं और उनकी सफ़ेद दाढ़ी सिफ़रिश के लिए लाए हैं।" इसके बाद वर्षा हुई।

10- jlwy' dh dczij tkdj jlwy' ls Qfj;kn@xgkj 'इसतीआब' इब्ने अब्दुलबर में है कि उमर के समय में एक बार जो सूखा पड़ा तो मुसलमानों में से एक व्यक्ति, बैहक़ी ने लिखा है कि वह रसूल[स] के सहाबियों में से बिलाल बिन हारिस थे, रसूल[स] की क़ब्र पर आए और कहा या रसूलल्लाह! अपनी उम्मत के लिए वर्षा के लिए प्रार्थना कीजिए कि इनका विनाष हो रहा है। इस पर किसी ने एतराज़ नहीं किया।

11- ukcxk tvnh dh jlwy' dh dczlsQfj;kn&

तृतीय ख़लीफ़ा उस्मान के समय में राज्य के गर्वनर ने जअदी के साथ कठोरता से काम लिया तो नाबिग़ा ने कुछ शेर रचे जिनमें यह कहा है कि "ऐ पैग़म्बर और उनके दोनों साथियों की क़ब्र हम आपसे फ़रयाद कर रहे हैं। यह नाबिग़ा हज़रत[स] के बहुत बड़े सहाबी हैं।"

12- vCnqYykg fcu mej dh jlwy vYykg' lsQfj;kn&

शफ़ा द्वारा काज़ी अय्याज़ में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर के पैर में एक बार बहुत दर्द हुआ। किसी ने कहा कि जो सबसे अधिक प्रिय हो उसे पुकारिए। उन्होंने कहा "वामुहम्मदाहु" (हे मुहम्मद) बस यह कहते ही उनके पैर का दर्द समाप्त हो गया।

13- mLeku fcu gquQ+ dh roLlqy ds ckjs esa funZ'k&

बैहक़ी ने और अबू नईम ने किताब–उल–मारिफ़ा में लिखा है। सुहैल बिन हुनैफ़ का बयान है कि एक व्यक्ति तृतीय ख़लीफ़ा के पास किसी काम से जाता था मगर वह उसकी तरफ़ ध्यान नहीं

करते थे। उसने उस्मान बिन हुनैफ़ से इसका वर्णन किया। उन्होंने कहा जाकर वुज़ू करो। फिर मस्जिद में जाकर दो रकत नमाज़ पढ़ो। फिर कहो, 'पालनहार'! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ और तेरी ओर ध्यान करता हूँ 'तेरे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[स] कृपालु नबी के द्वारा' या मुहम्मद! मैं आपके द्वारा अपने प्रभु की ओर ध्यान करता हूँ कि मेरी यह कामना पूर्ण हो। इसके बाद अपनी कामना बताना अतः उसने ऐसा किया और फिर जनाब उस्मान बिन अफ़्फ़ान के द्वार पर गया तो द्वारपाल आया और उसे उस्मान के पास ले गया। उन्होंने उसको आदरपूर्वक बिठाया और कहा— बताओ तुम्हारी क्या ज़रूरत है? और उस ज़रूरत को पूरा किया।

14- iSEcj' ds }kjk LokLF; dh nqk ekaxuk&

सहीह मुस्लिम में अस्मा बिन्ते अबिबक्र से रवायत है कि उन्होंने पैग़म्बर[स] का कुर्ता निकाल कर दिखाया और कहा यह आइशा के पास था और हज़रत[स] इसे पहनते थे। अब हम इसे धोकर बीमारों को पानी पिलाते हैं और इसके द्वारा स्वस्थ होते हैं। इसे वहाबी जत्थे के सरदार इब्ने क़य्युम ने भी अपनी किताब "ज़ादुलमआद" में लिखा है।

15- vCnqYykg fcu tqcS dk roLlqy&

इब्ने ख़ल्लिकान ने अपनी तारीख में शिअ़बी की रिवायत लिखी है कि मैंने एक अजीब बात देखी। हम लोग पवित्र काबे के आंगन में थे। मैं और अब्दुल्लाह बिन उमर और इब्ने जुबैर और मुस्अ़ब बिन जुबैर और अब्दुल मलिक बिन मरवान। नमाज़ के बाद सब लोगों ने कहा कि एक व्यक्ति हममें से उठे और रूकने यमानी की ओर जाए और उसे पकड़ के अल्लाह से प्रार्थना करे तो वह ज़रूर पूरी होगी और फिर सबने कहा तुम अब्दुल्लाह बिन जुबैर उठो कि तुम हिजरत के बाद सबसे पहले माँ के पेट से जन्मे व्यक्ति हो। इस पर वह उठे और रूकने यमानी को पकड़ कर कहाः—

"पालनहार! तू बड़ा है हर बड़ी से बड़ी बात के लिए तुझ ही से आशा बान्धी जा सकती है। मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ तेरे अर्श की इज़्ज़त (महिमा/प्रभुत्व) के द्वारा तेरे चेहरे की इज़्ज़त के द्वारा और तेरे पैग़म्बर की इज़्ज़त के द्वारा कि तू मुझे दुनिया से ना उठाना यहाँ तक कि मैं हिजाज़ का हाकिम हूँ और मुझे ख़लीफ़ा कह कर सलाम किया जाए।

इन तवस्सुल के सबूतों में से कुछ तो हज़रत[स] की वफ़ात (देहान्त) के बाद के हैं इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि जीवन में हज़रत[स] के द्वारा दुआ में कोई बुराई नहीं है वफ़ात के बाद यह नहीं होना चाहिए। इसके अलावा एक तो सिद्धान्तया जो चीज़ शिर्क में हो उसमें किसी के जीवन व मृत्यु का अन्तर कोई अर्थ नहीं रहता और फिर यह रसूल[स] की मृत्यु वास्तव में वैसी मृत्यु नहीं है जो साधारण लोगों की होती है बल्कि आप[स] इस मृत्यु के बाद भी वास्तव में सुनते और जवाब देते हैं। इसके विस्तार का यह समय नहीं है मगर संक्षेप में इतना कहना है कि शहीदों का जीवन कुरान मजीद की आयतों से साबित है। और पैग़म्बरे खुदा[स] का स्थान अल्लाह के सामने वास्तव में दूसरे शहीदों से बहुत ऊँचा है। और अबू दर्दा की रिवायत है कि रसूलल्लाह[स] ने फ़रमाया कि शुक्रवार को मुझ पर बहुत सलवात भेजा करो कि इस दिन फ़रिश्ते आते हैं और कोई व्यक्ति मुझ पर सलवात नहीं भेजेगा मगर यह कि वह उसकी सलवात मेरे सामने आएगी। रावी (रिवायत करने वाला/बात दोहराने वाला) कहता है मैंने कहा कि आपकी मृत्यु के बाद भी? कहा मेरी मृत्यु के बाद भी। वास्तव में अल्लाह ने धरती पर हराम (निशिद्ध) किया है कि वह पैग़म्बरों के शरीर को खाए और पैग़म्बर जीवित रहता है उसे रिज़्क़ (आजीविक़ा) मिलता है। हाफ़िज़ इब्ने माजा ने अपनी सुनन (हदीसों का संक़लन) में इसकी रिवायत की है और इसी तरह की बहुत सी हदीसें हैं जो 'ख़साइस उल, कुबरा सुयूती' में और 'दलाइलिन्नुबूवा' हाफ़िज़ अबू नईम इसफ़हानी में आई हैं। और मुहद्दिस सिनदी ने अपने हाशिए में जो सुनने ईब्ने माजा पर है इस हदीस की शरह में लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं

¼ukV%fo'ok lsjlyl0 ejsughau ghmudk ngkUr gqkA mudh ng Hkh ckdh gSA½

होना चाहिए। इसलिए कि यह आयत शहीदों के बारे में तो कुरान मजीद में आई है तो फिर पैग़म्बरों का क्या कहना? और नबियों के विशिष्ट जीवन के बारे में भी कुछ हदीसें हैं उनमें से यह है कि आप[स०] ने जनाब मूसा[स०] को देखा कि वह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं। अब जबकि रसूल[स०] का जीवित होना साबित हो गया तो आपके जीवन में तवस्सुल की जो हदीसों हैं वह सब इस समय भी तवस्सुल के सही होने का सबूत हैं।

क़सतलानी ने 'मवाहिबे लदुन्निया' में लिखा है कि हज़रत[स] के जीवन में और उसके बाद तवस्सुल के सबूत अधिक हैं कि उनको घेरा नहीं जा सकता। हदीस के विद्वान हज़रत[स] की क़ब्रे पाक पर जाकर दुआ को बुरा नहीं समझते थे अतः अल्लामा शम्सुद्दीन जज़री ने बहुत अच्छे शब्दों में लिखा है कि "अगर पैग़म्बर[स] की पाक क़ब्र पर दुआ क़बूल न हो तो और कहाँ क़बूल होगी?"

और शाह अब्दुल हक़ देहलवी ने अपनी किताब "जज़्बुलकुलूब" में लिखा है कि मक़सद के पाने में अजीब अजीब फ़ायदे उठाने में जो बातें हज़रत[स] की क़ब्रे पाक पर फ़रयाद से मुहताजों और ग़रीबों के सामने आए हैं, बहुत हैं। काज़ी अयाज़ ने शिफ़ा में इमाम मालिक का विवाद ख़लीफ़ा अब्बासी अबू जाफ़र मनसूर दवानक़ी के साथ लिखा है कि ख़लीफ़ा ने उनसे पूछा कि मैं काबे की ओर मुहँ करके खड़ा हूँ या मुबारक (शुभ) चेहरों की ओर मुहँ करके खड़ा हूँ? इमाम मालिक ने कहा कि आप हज़रत[स] की ओर से मुहँ क्यों कर मोड़िएगा जबकि वह आपके भी वसीले हैं अल्लाह की ओर से और आपके पिता अबुलबशर (मानव–पिता) हज़रत आदम के भी।

हमारे समय के बड़े आलिम सय्यद इब्राहीम रावी रफ़ाइ ने "औराक़े बग़दादिया" में रबली की बात दोहराई। और उन्होंने ज़ियारत के तरीक़े में लिखा है कि फ़िर पाक क़ब्र के निकट आए और हज़रत के पवित्र मस्तक (सिर) की ओर मुख और क़िबले की ओर पीठ किये हुए और लगभग चार हाथ की दूरी पर खड़ा हो ओर उसके नीचे के हिस्से की ओर दृष्टि रखे और सलाम करे क्योंकि हदीस है कि जो मुझे सलाम करेगा मैं उसका जवाब दूंगा। और सलाम में आवाज़ ऊँची न करें जिस प्रकार हज़रत के जीवन में हुक्म था। अन्त में हज़रत के पवित्र मुख की ओर आकर हज़रत से तवस्सुल करें और आप[स] से अल्लाह के यहाँ शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) की उम्मीद रखें।"

पिछले सबूतों में से बहुत से यह पता चलता है कि हज़रत[स] की तरफ सम्बन्ध वाली हर चीज़ से बरकत लेना सहाबी व ताबईन और पहले के नेक लोग में माना हुआ रहा है। अब्दुल्लाह बिन उमर के लिए कहा जाता है कि वह पैग़म्बर[स] के चिन्हों की खोज में फिरते थे और जहाँ हज़रत ने नमाज़ पढ़ी चाहे जीवन में एक बार ही, वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ते थे उन्हीं स्थानों पर बाद में मस्जिदों का निर्माण हुआ। उसका विवरण समहूदी ने "वफ़ा" में किया है।

इब्ने क़य्यूम ने अपनी किताब "ज़ादुलमआद" में जनाब इस्माईल व हाजरा के बारे में निश्चित लिखा है कि "इब्राहीम और उनके पुत्र इस्माईल का वतन (मूल देश) से दूर होना और अकेले पन तथा बलिदान (कुर्बानी) के लिए तैयार होना इन सब का नतीजा था कि उनके चिन्ह और उनके पाँव के निशान इबादत का स्थान बन गये मोमिन के लिए और हज के संस्कारों (तरीक़ों) में आ गए क़यामत तक के लिए।" जब जनाबे इस्माईल व हाजरा के चिन्ह इस कारण कि उन्होंने प्रभु के मार्ग पर चलते हुए कठिनाइयाँ उठायीं इस लायक हुए कि वह इबादत का स्थान बन जाएं, तो जो सब नबियों में सबसे श्रेष्ठ हो जिसका कहना हो कि किसी नबी को उतनी कठिनाइयाँ नहीं पहुँचीं जितनी मुझे पहुँची है, आप[स] के चिन्ह क्या इस लायक़ नहीं होंगे कि उनका आदर सत्कार किया जाए? और यह विधान (सामान्य सूत्र) है कि जब कोई वस्तु किसी आदरणीय व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है तो वह भी आदरणीय हो जाती है। अतः सुयूती ने खसाइसुल कुबरा में मेराज के हाल में पैग़म्बर[स] की ज़बानी लिखा है कि

"मैं चला और मेरे साथ जिब्रईल थे। एक स्थान पर पहुँच कर उन्होंने कहा कि सवारी से उतर आइए और इस स्थान पर नमाज़ पढ़िये। मैंने ऐसा किया तो उन्होंने पूछा आप जानते हैं? आपने कहाँ पर नमाज़ पढ़ी? यह तैबा है जहाँ आप हिजरत (यात्रा/पवित्र स्थान) करके जाएँगे। इसके बाद मैं चला तो फिर उन्होंने कहा उतर आइए। यहाँ नमाज़ पढ़िये। यह तूरे सीना (एक पहाड़ी) है जहाँ अल्लाह ने मूसा[अ] से बात की थी फिर मैं चला और उन्होंने कहा उतरिये यहाँ नमाज़ पढ़िये यह बैयतुल लहम है जहाँ ईसा[अ] का जन्म हुआ था।"

अब हर सच्चे अन्तःकरण वाला फ़ैसला कर सकता है कि ईसा[अ] का जन्म स्थान इस लायक हो कि वहाँ नमाज़ पढ़ी जाए तो क्या हज़रत ख़ातेमुल अम्बिया (आखिरी नबी) सल्लल्लाहो अलयहे व आलेही वसल्लम का वह भवन जहाँ आप[स] का जन्म हुआ वह इस लायक हो कि उसे तोड़ कर ध्वस्त कर दिया जाए जैसा कि वहाबियों ने किया?

इसके अलावा हज़रत[स0] के आदर व हज़रत से जुड़ी हुई हर वस्तु का आदर और उन्हें शुभ/बरकत वाला समझना, इसके बहुत से सबूत सहाबियों के चलन और पहले के नेक लोगों में मिलते हैं।

अबू अम्र शैबानी की रिवायत है कि मैं एक वर्ष तक इब्ने मसऊद के साथ उठता बैठता रहा जिस समय वह 'क़ाला रसूलल्लाह कहते थे' उनके शरीर में थर थरी सी पड़ जाती थी।

शैख बद्रूद्दीन बिन इब्राहीम बिन सअ़द उल्लाह बिन जमाअ कनानी (मृत्यु 733 हिजरी) की किताब "तज़किरतुस्सामे वल मुतकल्लिम" (प्रकाशन दाएरातुल मआरिफ़ हैदराबाद 1353 हिजरी) में है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ के सामने जब हज़रत[स] का ज़िक्र होता तो आपका चेहरा पीला पड़ जाता था।

इसी किताब में इमाम मालिक के लिए लिखा हैं कि जब उनके सामने पैग़म्बर[स] का ज़िक्र होता था तो उनके चेहरे का रंग बदल जाता था और वह झुक जाते थे। अब्दुल करीम समआनी की किताब "अदब उल अमलाअ वसतमलाअ" (यही प्रकाशन 1953) में यह्या बिन बुकैर से रिवायत है जब मालिक मुअत्ता (पैग़म्बर[स] की हदीसों की किताब) की हदीसों का पढ़ पढ़कर मुक़ाबला करते थे तो पूरे वस्त्र अमामे (पगड़ी) के साथ धारण करते थे और सिर झुकाए रहते थे और जब तक उन हदीसों को लिख नहीं लेते थे सर को खुजाते भी नहीं थे, न ही नाक छिनकते थे। यह हालत उनकी नबी[स0] की हदीस के आदर सत्कार में होती थी।

इसी किताब में मुईन बिन ईसा वर्राक़ का बयान है कि मालिक जब हदीसें बयान करने बैठते तो पहले स्नान करते और ख़ुशबू लगाते थे सुनने वालों में से कोई आवाज़ ऊँची करता तो नाराज़ हो जाते और कहते थे कि अल्लाह ने कहा है कि पैग़म्बर[स] की आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊँची न करो। आज कोई रसूलल्लाह[स0] की हदीस पढ़ते समय ऊँची आवाज़ करे तो वह ऐसा ही होगा कि जैसे उसने हज़रत की आवाज़ पर आवाज़ ऊँची की।

दूसरे लोगों के अलावा नवाब सिद्दीक़ हसन खाँ क़न्नोजी ने भी लिखा है कि

"इमाम मालिक मदीने में पैदल चलते थे कि कभी उनके शरीर से मिट्टी का कोई वह कण छू जाए जिस पर हज़रत[स] रास्ता चलते हों और हज़रत के आदर में वहाँ सवार होकर नहीं चलते थे और कहते थे कि मुझे लज़्जा (शर्म) आती है कि मैं सवारी पर चलूँ उस मिट्टी पर जहाँ हज़रत[स] दफ़्न हैं।"

आदर का एक तरीक़ा चूमना भी है जिसके ख़िलाफ वहाबी लोग बहुत सख़्ती करते है। मगर इसके लिए हज़रत[स] ने चुप रहकर इसे पसन्द (अनुमोदन का चुप) ही नहीं किया बल्कि इसकी साफ़ आज्ञा भी दी, आपके बाद पहले के नेक लोगों का चलन भी रहा है अतः "अदबुल अमलाअ वस्तम्लाअ" में अब्दुर्रहमान बिन कअ़ब बिन मालिक की रिवायत है अपने पिता से कि मैं हज़रत[स] के पास गया तो हज़रत[स] के हाथों और दोनों घुटनों

¼cfd ;+k ls 14 ij------------------------------------½

ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ उमदतुल उलमा आयतुल्लाह सय्यद कल्बे हुसैन रह०

l en vCckl

उमदतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे हुसैन उर्फ़ कब्बन साहब क़िब्ला 6 शाबान 1311 हि0 को सर्व श्रेष्ठ खानदान खानदाने इज्तेहाद, लखनऊ में पैदा हुए और आपका तारीख़ी नाम अली अख़्तर था। आपके पिता कुदवतुल उलमा मौलाना सय्यद आक़ा हसन साहब क़िब्ला हिन्दुस्तान के उच्चकोटि के नामवर उलमा में थे और समाज में आपको बहुत सम्मान प्राप्त था और आप धर्म के प्रचार–प्रसार ओर शियों की शिक्षा और आर्थिक समृद्धि के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। शियों की कई संस्थाओं की स्थापना में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

f'k{kk %

मौलाना कल्बे हुसैन ने प्रारम्भिक शिक्षा पारिवारिक परम्परा के अनुसार अपने पिता से प्राप्त की। उसके बाद आपने उस समय के प्रख्यात उस्तादों सय्यद मोहम्मद बाक़िर साहब, सय्यद मोहम्मद रज़ा साहब और सय्यद मोहम्मद हादी साहब आदि से शिक्षा ग्रहण की। फिर आप उच्च शिक्षा के लिए नजफ़े अशरफ़ गये और वहाँ तीन साल रहे और उच्चकोटि के उलमा से विद्या प्राप्त की। वहां से वापसी पर आपने ज़ाकिरी और ख़िताबत की ओर ध्यान दिया और मजलिसें पढ़ने लगे। हिन्दुस्तान में उस समय मौलाना सिब्ते हसन, मौलाना सय्यद मोहम्मद हुसैन साहब, मौलाना मकबूल अहमद दहलवी आदि ज़ाकरी के मैदान में छाये हुए थे। उमदतुल उलमा ने इन हालात में मजलिसें पढ़ना शरू कीं।

tkfdjh dk nkSj %

उमदतुल उलमा की ज़ाकरी की शरूआत 1331 हि0 को इमामबाड़ा गुफरानमआब में उनके वालिद कुदवतुल उलमा सय्यद आक़ा हसन साहब की प्रेरणा से हुई। इस के पूर्व गुफ़रानमआब के इमामबाड़े में कोई ज़ाकिर पुराने तर्ज़ में मजलिसें पढ़ा करते थे। सन् 1331 हि0 के मुहर्रम से कुछ ही दिन पहले उनका आकस्मिक निधन हो गया तब कुदवतुल उलमा ने अपने बेटे मौलाना कल्बे हुसैन साहब से गुफरानमआब के इमामबाड़े में अशर–ए–मोहर्रम की मजलिसें पढ़ने के लिए कहा। पहले साल उन्होंने मजलिसों को लिखकर पढ़ा फिर उनकी ज़ाकरी निखरती गई और धीरे–धीरे उन्होंने ज़ाकिरी में अपनी एक विशेष शैली और पहचान बना ली और उनकी गणना हिन्दुस्तान की उच्चकोटि के ज़ाकिरों और ख़तीबों मे होने लगी।

वह सरल उर्दू भाषा और संतुलित लबो लहजे का प्रयोग करते थे और उनका अन्दाज़ संजीदा और पुरमतानत (गम्भीर) होता था। उनकी मजलिसें आम फ़हम होती थी। और वह धार्मिक मसलों को बड़े सहज तरीक़े से समझाते थे और मजलिसों में दीनी ज्ञान और चरित्र निर्माण पर ज़ोर देते थे। वह मसाएब इतने प्रभावी अन्दाज़ से पढ़ते थे कि श्रोतागण शोकाकुल हो कर खूब गिरया करते थे। उस समय भी लखनऊ को हिन्दुस्तान की अज़ादारी में मरकज़ीयत हासिल थी और उमदतुल उलमा की ज़ाकिरी ने लखनऊ की अज़ादारी में गुफरानमआब की अशर–ए–मुहर्रम की मजलिसों को मरकज़ीयत प्रदान की। इन मजलिसों मे बहुत बड़ा मजमा होता था जो समय के साथ बढ़ता ही गया।

etfyls'kkea xjhckka %

मजलिसे शामें ग़रीबों की शुरूआत भी लखनऊ के गुफरानमआब के इमामबाड़े में 1924 ई0 के मुहर्रम से हुई। पहली शामें ग़रीबां की मजलिस मौलाना सिब्ते मोहम्मद हादी ने पढ़ी थी जिसमें

केवल 20–25 श्रोता थे। इसके बाद से उमदतुल उलमा कल्बे हुसैन साहब ने मजलिसे शामे ग़रीबां गुफ़रानमआब के इमामबाड़े में पढ़ना शरू की और चूंकि यह मजलिस अज़ादारी में एक जिद्दत (अन्वेषण) थी इस मजलिस को शीघ्र ही खास महत्व और स्थान प्राप्त हुआ और इस मजलिस की ख्याति फैलती गई। विशेषकर जब 1944 ई0 से यह मजलिस महाराजा महमूदाबाद महमूद हसन खाँ और उनके छोटे भाई महाराजकुमार अमीर अली खाँ साहब के प्रयासों से ऑल इण्डिया रेडियो से बराहेरास्त (डायरेक्ट) प्रसारित होने लगी तो इस मजलिस के सुनने वालों का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया और जहाँ जहाँ भी ऑल इण्डिया रेडियो का प्रसारण पंहुचता था लोग इस मजलिस के सुनने की प्रतीक्षा करते थे। मौलाना डा0 कल्बे सादिक़ साहब मजलिसे शामें ग़रीबां के सम्बन्ध में कहते हैं कि ''यह मजलिसे शामे ग़रीबां मेरे वालिद बहुत ही तैयारी से पढ़ते थे और यह उनकी शाहकार मजलिस हुआ करती थी। 1962 तक वालिद मरहूम पढ़ते रहे। 1963 में वह ग़िज़ा की नली में कैंसर के मूज़ी मर्ज़ में मुबतेला हुए। उस साल वह मुहर्रम की मजलिसें गुफ़रानमआब में नहीं पढ सके''। लगभग 40–45 मिनट के सीमित समय के अन्दर पूरे वाक़िय–ए–कर्बला, उसकी पृष्ठभूमि, तथा उसके दूरगामी परिणाम एंव प्रभाव, इस्लाम के इतिहास के विश्लेषण आदि पर अपने खास अन्दाज़ में प्रकाश डालते थे। और इमाम हुसैन, उनके परिवार वालों और साथियों पर शहादत के पहले और शहादत के बाद जो अत्याचार और जुल्म हुए उनका बड़ा ही मार्मिक वर्णन करते थे जिससे मजलिस में खूब आहो बुक़ा और गिरया (रूदन) होता था। यह कोई आसान काम न था और समन्दर को कूज़े (प्याले) में समोने के समान था। परन्तु उमदतुल उलमा इस कठिन कार्य को बड़े सहज ढंग से और पूरी दक्षता के साथ सम्पन्न करते थे और वास्तव में मजलिसे शामे ग़रीबाँ उनका शाहकार हुआ करती थी और हर साल की मजलिस पहले की मजलिसों से भिन्न होती थीं। उन्होंने मजलिसे शामें ग़रीबां को उरूज (चरम बिन्दु) पर पंहुचा दिया और इसी लिहाज़ से वह ज़ाकिरे शामें ग़रीबाँ के लक़ब (उपाधि) और नाम से विख्यात हुए। हज़रत 'मानी' जायसी ने उनको ''ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ ए दिले ज़हरा के चैन'' कहकर सम्बोधित किया है।

यह मजलिसें अदबी हैसियत से भी बहुत उच्चस्तर की होती थीं और इस लिहाज़ से भी उनका बड़ा महत्व था। उमदतुल उलमा की शामें ग़रीबाँ की मजलिसों में उर्दू भाषा का चमत्कार श्रोताओं को प्रभावित किये बिना नहीं रहता था। उनका एक खास लबोलहजा होता था और ज़बान में सलासत, शीरीनी और अदबी लताफ़त होती थी छोटे और आम फ़हम जुमलों का इस्तेमाल उमदतुल उलमा के बयान की ख़ूबी और खुसूसियत थी और चुन–चुन कर धीमे–धीमे बोले गये अल्फ़ाज़ एक कोहराम मचा देते थे।

वह एक तुफान बरपा कर गया सारे ज़माने में
सरे मिम्बर किया जिसने ख़िताब आहिस्ता आहिस्ता।

इमाम हुसैन से अक़ीदत रखने वाले और उर्दू के शैदाई (प्रेमी) दूसरे समुदाय और धर्म के लोग भी आप की शामें ग़रीबाँ की मजलिस को बड़े शौक़ से रेडियो पर सूनते थे। मैं खुद दूसरे समुदाय और धर्मों के कई लोगों को जानता हूँ जो शामें ग़रीबां की मजलिस को कानपुर में शौक़ से रेडियो पर सुनते थे और उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते थे।

आपके बाद शामें ग़रीबाँ की पहली पजलिस 1963 ई0 में आपके फ़रज़न्द डॉ0 मौलाना कल्बे सादिक़ साहब ने पढ़ी। उसके बाद आक़ा–ए–शरीयत मौलाना कल्बे आबिद साहब अशर–ए–मोहर्रम के साथ शामें ग़रीबाँ की मजलिस पढ़ते रहे और यह सिलसिला उनके देहान्त तक जारी रहा और उनके बाद अब इस मजलिस को उनके बेटे क़ायदे मिल्लत मौलाना सय्यद कल्बे जवाद साहब पढ़ रहे हैं।

vkidk Qfdr Ro rFkk lok,a%

उमदतुल उलमा ज्ञानी, निष्ठावान, दयालू, मृदुलभाषी और मिलनसार स्वभाव के थे। आप इत्तेहादे बैनुलमुस्लेमीन के हामी और विभिन्न

धर्मों के बीच रवादारी के समर्थक थे। इसी कारण हर फ़िरके, क़ौम और धर्म के मानने वाले लोग आपका बड़ा सम्मान करते थे। आप यतीमों, बेवाओं, और ग़रीब लोगों की मदद करते रहते थे। आपने क़ौम और मिल्लत की भलाई के कामों में हमेशा रहनुमाई की। आपने क़ौम को व्यापार के लिए भी प्रेरित और प्रोत्साहित किया। आप ऑल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस में भी सक्रिय रहे और आपने उसके 28 व 29 दिसम्बर 1955 को मेरठ में होने वाले अधिवेशन और 1957 में कलकत्ता में होने वाले जलसे की अध्यक्षता भी की। आपने धार्मिक पत्रिकाएं प्रकाशित कीं और क़ौमी विपदाओं में सहायता कार्यों के आयोजन में हमेशा अगुवाई की। आप आसिफ़ी मस्जिद के इमामे जुमा थे और कई वक़्फ़ों की देखभाल की जिम्मेदारी भी आप पर थी।

vkidk nsgkUr %

6 अक्टूबर 1963 को बहत्तर वर्ष की आयु में आपका देहान्त हो गया। देहान्त की ख़बर फैलते ही लखनऊ और आस पास के शहरों में शोक की लहर दौड़ गई और आपके चाहने वालों की आंखे नम हो गईं। आपके जनाज़े में उस समय का सबसे बड़ा मजमा था। जिसमें पास के कई जिलों के लोग और दूसरी कौमों के लोग भी बड़ी संख्या में शरीक थे। आप अपने वंशजों की कब्रों के बीच गुफ़रानमआब के इमामबाड़े में दफ़्न हुए।

vkidsiq= %

आपने अपने पीछे पांच नेक और तेजस्वी पुत्र छोड़े।

1. सफ़वतुल उलमा मौलाना सय्यद कल्बे आबिद साहब
2. सय्यद कल्बे हादी साहब
3. सय्यद कल्बे बाक़िर साहब
4. मौलाना डा0 सय्यद कल्बे सादिक़ साहब
5. सय्यद कल्बे मोहसिन साहब

vkidh 'kk;jh %

यह बहुत कम लोग जानते हैं कि उमदतुल उलमा ने उर्दू और फ़ारसी में शायरी भी की। आपके उर्दू कलाम के चन्द नमूने निम्न में प्रस्तुत किये जाते हैं:

ख़ताओं पर खताऐं हो रही थीं नावक अफ़गन से
इधर तीरों से बनता जा रहा था आशयाँ अपना
हाय 'अख़्तर' तुझे ख़ुदा बख़्शे
तेरी हर बात याद आती है।

✦✦✦

क्यों खिली चादर की कलियाँ, क्यों किया बुलबुल ने शोर
हम लहेद में हैं तो तुरबत पर बहार आने से क्या।

✦✦✦

कोई पूछे साकिनाने क़ब्र से
दर्दे दिल अब भी है या आराम है।

✦✦✦

अब ग़म न रहा, आहें न रहीं, नाले न रहे, उलझन न रही
दिल जाते ही सोज़े उल्फ़त की एक–एक निशानी खत्म हुई।
जो कुछ था बहुत था जीते जी जब मैं न रहा फिर कुछ न रहा
मुंह फेर के दुनिया यूँ सोई जैसे कि कहानी ख़त्म हुई।

✦✦✦

उड़ते फिरते हैं चमन में मेरे उखड़े हुए पर
ढूंढती फिरती है यूँ कूव्वते परवाज़ मुझे।

✦✦✦

ख़ल्क़े आलम है करिश्मा इश्क की तासीर का
आस्माँ इक तंग हल्क़ा है मेरी ज़न्जीर का।

नौहा

सितम हज़ारों हुए सिब्ते मुसतफ़ा के लिए
बुला के शाह को मेहमाँ किया जफ़ा के लिए।
हुसैन हाथों पे असग़र को लेके कहते थे
पिला दो पानी मेरे लाल को ख़ुदा के लिए।
जवाब मिलता था क़तरा न देंगे हम उसको
गला सग़ीर का है नावके क़ज़ा के लिए।
सदा यह शाह ने दी दूध माँ का ख़ुश्क हुआ
यह बच्चा आया है पानी की इल्तिजा के लिए।
कहा यह शिम्र ने दरिया से जानवर पी लें
है बन्द आब बिने सिब्ते मुस्तफ़ा के लिए।
कोई अलम न हो 'अख़्तर' को जुज़ ग़मे शहेदीं
हुआ है ख़ल्क़ यह दिल शाह पर बुका के लिए।

✦✦✦

bLyke vkSj cnyrs tekus ds rdkts+

eQfDdjs bLyke MkW eksykuk lS;n dYcs lkfnd +fdO;k

tekuk ,d leqnz ds leku gS dHkh ;g leqnz 'kkUr FkkA dHkh&dHkh ygjsa mBrh Fkh] exj FkksM+h nsj esa vkSj FkksM+h nsj ds fy;sA vc bl leqnz esa rwQku vk x;k] vuojr rwQku gS tks gj ?kaVs lSdM+ksa ygjsa mBk jgk gSA u;h&u;h vkfo"dkjsa gks jgh gSa] u;s&u;s fopkj lkeus vk jgs gSa] ;s rwQku u ek;wl fd;s tkus ds ykbd gSa u mu ds lkeus >qdus ds ykbd gSaA vxj lkspks rks ;g le>ks fd ;g rwQku leqnz dh ygjksa ds vkus ls Fkk] ,d ubZ rkdr gS tks rqEgsa lkFk ys dj vkxs c<+uk pkgrh gSA bl rwQku ls eqdkcyk djus ds fy;s fgEer dh t:jr gS] Hkkxus dh ughaA ;gh og txg gS tgk¡ ge viuh igpku cuk ldrs gSaA

bLyke og tgkt+ gS tks bl rwQku esa Hkh lcls vkxs jgrk gS] D;ksafd bldk vk/kkj dqjvku vkSj vgysc+Sr ¼v0½ gSaA ;g bl tgkt+ dk yaxj gS tks mls cgus ls jksdrk gS vkSj mldh fn'kk fuf'pr djrk gSA bl tgkt+ esa cSBus okys ;kf=;ksa dks bl ckr dk fo'okl gksuk pkfg, fd ;g tgkt+ mUgsa eafty rd igq¡pk;sxkA

bLyke vkSj cnyrs tekus ds rdkts

(Compromising)

djhe ¼l0½us blsv kf[kjh 'kDy nsd\$ blsbl yk;d cuk fn;k fd ;g viuss;kf=;ksa dksgj leqnj esa vkSj gj rwQku lscpkrk gq vk bfPNr eafty rd igq¡pk nsA bl esa dkbZ lUng ughafd tgkt+gj rjg eqdEey gS vkSj gj dehvkSj nks"k lsnjw gSysfdu iz'u gsml ds vey sd sc kjseaA ;g v eyk tksml ij bl oDr+ lokj g\$ ml dh n'kk ;g gSfd bueadN rks,sssfudEes cs<+&cs<+s gSft udksu tgkt+dh tkudkjh gSvkSj u leqnz dh vkxkghA dN oksgSa tkstgkt dsdy&iqtksZ lsrksokfdQ gSaexj leqnzlsvufHkK] dN oksgSa tksleqnz dstkudkj gSaexj tgkt+lsukokfdQA tkfgj gSfd veyk vxj bl BkV dk gks rkseqlkfQ+jksadk vatke ek;wl gSA gekjseqyeku d.kZ/kjksadk ;ghgky gSA gekjhvDljh;r ¼cgqer½ ;k rksog gSft lsu ml nhu dh[kcj gSft lsoksekuus jgsgSa u ml nqfu;k dh[kcj gSft lesaog jg jgsgSA dN fo}ku vxj nhu dscksjs esatkurs Hkhgsa rksnqfu;k tekusls cs[kcj gSa vkSj gekjs cq)thoh vkSj nkfu'oj vxj oDr+ dsrdktksalsvkxkg gSa rksnhu dsekeys esadksjsA

;ghoksyksx gSa ftUgsaoDr+ dsrdktksavkSj bLyke dsmlwyksa esaVdjko utj+ vkrk gSvkSj mudh le> esa ughaavkrk fd bl Vdjko dksD;ksadj nwj djsaA u;h&u;h bZtknksa ds lkFk u;h&u;h lkspk] u;s&u;s [k;ky dsvkSj u;h fopkj/kkjkvksalsHkh vk[ksa cUn fd;sjgsa vkSj bLyke ds[k;kyhv dhnkseeku;rkvksavkSj fl)kUrksa dkslhusls yxk;sjgsa ;k bLyke dksfonk djds tekus ds Q\$ku esacg tk;sa ;k dksbZ le>kSrk ijd (Compromising) jo_;k viuk;k tk;s! bLyke dsmlwyksavkSj tekusdsrdktksaesaVdjko flQZ mUgha yksxksadksfn[kkbZnsrk gSt ks;k bLyke dh okLrfodrk vkSj f'k{kk lsvifjfpr gSa;k ftuesabruh cl hjr ¼vUrnZf"V½u gksfd tekus dh okLrfod o oSKkfud

iøfÙr vkSj le; ds HkkSfrdokn] dqnjrh cfYd cgkg jfo;ksa eas Hkh u dj ldsA **u;s tekus esa lkbUl vkSj VsDuksykWth us lH;rk vkSj laLdfr dh Qqyokjh esa u;h&u;h D;kfj;ka yxk;h gSa ysfdu bu D;kfj;ksa esa Qwyksa ds vxus&cxus dk lcc Hkh gSA gesa bl Qqyokjh dh lqxU/k ls ykHk mBkuk gS] gesa bu D;kfj;ksa ls ykHk mBkuk gS exj nkeu dks rkj&rkj gksus ls cpkuk Hkh gSA**

oks lkfgcku tks bLyke dh vlyh;r ls ukvk'kuk gSa vifjfpr gSa Kku&foKku dh gj rjDdh vkSj gj u;h pht+ ls ukvkS fopkj ls fcndrs gSa vkSj gj u;h pht+ dks bLyke dk nq'eu le>us yxrs gSaA bl fxjksg ds lkeus eq¶rh ds nsuks gh eku;rk,a; ;k rks vius [k;ky dh bLyke dks lkSaius ls yxk ds ftUnxh dh iwjh ds osgkfjd vkSj oSKkfud izxfr ls vyx vkSj cUn dj ysrh tk;s a ;k fQj t+ekus ds lkeus fcYdqy gfFk;kj Mky ds bLyke dks x;s cht+ sbfrgkl dk ,d iUuk cuk fn;k tk,A tks yksx ;qx ls vifjfpr gSa vkSj cl ;qx ls /kkSa [kk; sgq, gSa mu ds eu esa gS fd bLyke dks Hkh bZ'ojh; dh rjg le; ds lkFk le>kSrk dj cfYd eu= ysys us okyk pyu viuk ysuk pkfg;sA pqukaps bZ'ojh; ikfnfj;ksa us le; ds gkFk ij ^^cSr** dj ds gh gj nqfuokj] v'yhyrk] foykflrk vkSj dkefyIrk vFkkZr~ gj cn v[kykdh Qsy gksus dh vkSj v,¸kk'kh vkSj ftUl ijLrh dh gj 'kDy dks et+gch tokt+ ¼/kkfeZd Lohd`fr½ dk ioku½ ,oa nhu dj+kj fn;k gSA jg x;s fxurh ds pUn ckcl h;r] vUrnZkZ'kZyks tks bLyke ds ;FkkFkZ ls Hkh vifjfpr gSa vkSj le; dk cckg Hkh j[krs gSa og [kqn le>rs gSa fd le; ds rd+kts vkSj bLyke ds ;FkkFkZ ds chp Vdjko dk otwn ghu gh]t M+cq; kn ghu ghA og tkurs gSa fd ;g Vdjko lpeqp gS gh ugha cl fn[kkbZ nsrk gSA bl Å ij h Vdjko dh rg esa dqN xyr QgfeZ;ka gSa HkhA

og yksx tks bLyke ls vifjfpr gSa mu dks ;gh xyr QgeZ gS fd og bLyke ds fo/kku ;k vu dkuwu lkt+ dks cqfu;knh mlwyksa vkSj v eyh vkSj fQd+ gh eluy vFkkZr~ Qkogkfjd vkSj /kkfeZd izd.k dks ,d ghnt kZ ns rs gSaA gkyk¡fd lPpkbZ ;g gS fd bLyke esa tks pht+ ukdkfcys rCnhyh gS ;vFkkZr tks pht+ vifjorZuh; gS oks gS mlwy dk ey fl)kUrA jg x;s Qqeyh vkSj vey h el k;y] rCnhy EcUu/kh vkSj Qogkfjd izd.kr ks,s ls okyka ds fy; s bLyke esa ,s hypd j[kh x;h gS fd bLyke ds pyk sk ds v Unj jgrs gq, fofHkUu ifjfLFkfr;ksa esa el k;y dh Åijh lwjr&'kDy esa vey h Qsjcny ds lkFk ;g ge s kk dcy&,&vey gS lnSo Qogkfjd gSaA exj : ij s kk esa ;g Qsjcny fdlh v: .k lwjh ;k vkfjQ+ ekgks en [kk dk gd+ ugha ;g fl QZ mlwyh oD+r ds eqrkfcd gd+ gS tks bLyke ds xgu ckSf)d lkFk& lkFk le; ds rd+ kt+s lsHkh] t S hpkfg; s oSlk vknkg gk v oxr gSA

bLyke esa fo/kku ds eksfyd fl)kUr ,sh vkQkdh vkSj nk;eh gdhd+rsa gSa ,s s lkoZHkkSfed vkSj loZdkfyd ;FkkFkZ gSa ftu esa Qsjcny vlEHko gS u dkbZ mu ds cnyokus dh ekax dh fgEer dj ldrk gSA bLyke ds fo/kku dk vk/kkj nks fl)kUrksa ij gS&

1- dkbZ ckr vDy ds f[kykQ+ ugha gks ldrhA

2- dkbZ ckr vny ¼U;k;½ ds f[kykQ+ ugha gks ldrhA

[kqyh ckr gS fd ;g nksuksa mlwy ,s s ik;nkj vkSj nk;eh gdhd+rsa ;vFkkZr ,s s BksI vkSj lnSo cus jgus okys ;FkkFkZ gSa ;rh j[krs gSA fd u budks cnyuk lEHko gS vkSj u dksbZ Hkh Q fDr pkgs /kkfeZd i{k/kj gks ;k foi{kh] bu dks cnyokus dh ekax dj ldrk gSA

bLyke ds gj dkuwu ds lkFk ;g vkSj xyr gksus ds ;gh nks es;~kj&ekun.M gSA bu gh ds eqrkfcd gksus ;k u gksus ij fdlh /kkjk ds oS/k vFkok vo S/k (Valid or Unvalid) gksus dk bufglkj gksrk gS& fuHkZj rk gksrh gSA

fQDg dh rkjh[k /kkfeZd fo/kk ds bfrgkl ij utj+ j[kus okys yksx ;g ckr Hkyh Hkkafr tkurs gSa fd gekjs iwoZt nhuh fo'ks"kKksa okys vkfyeksa us gesa'kk vius ftEesnkjh egl wl dh gS fd vxj eqtyeku fdlh bLyke dh dkuwu dk xyr bLrseky djds vDy ;k vny dh cqfu;kn dks et+: g djus yxsa cq ;kU;k; ds vk/kkj dks

{kfrxzLr cukusyxars, s sl e; dsfy; smUgkasv ius Qr+ok} Q oLFkkv ka}kjk bl dkuwu ea, s hgncfUn; kj Q;scny ;k Q{k;k; adj nhgSfd dkuwu fQj l h/kk [kMk+gkstk; A bl rjg l e; dhizfr l stksu; &u;s l oky l keus vk;s mudk gy Hkh bUgha nks cqfu;knh mlwykadhjks'kuheas<w fudkyk x;kA dkuwu eaypd vkSj ^bfTrgkn** ;ghog nksphtsagSt ksbLyke dsdkuwu dhgesa'kkhv kSj noke dht kfeu g\$;v+uhmldslnS cusjgusdhftEesnkj gSA

vkt dsnkSj eacs'kd u;&u;slokyrst hls mHkj jgsgSaexj blea?kcjkusdhD;kckr gS ;gh v'kkml oDr+ Hkh Fkhtc bLyke viusbfCrnk;hnkSj lsydslkrohav kBoha lnhfgtjhrd rst hlsnqfu;kea QSy jgk FkkA bl QSykodsukrsfofHkUu lsadfr;ksa eqrfyQ+ rgt hcka lsvkeuk&lkeuk gqvk] vusd fopkj/kkjkv ka lsvkxkgh gqbZ vusd lH;rkv ka ls nqvk&lyke gqvkA bl ifjfLFkfr easfuR; fnu u;slokyka dklkeuk gkrs kFkk] u;&u;sfopkj lkeusv krsFksexj bLykehfQd usfcukfdlhHkhL=kss dhlg;rkfy;s gq vdysbl pqukSrhdkdke;kchlsedkcykfd;kA

;g Fkkmu gt jkr dsf[kykr dkrt th%

;g Fkhmu gt jkr dsfopkjkadhfoopukt ksbLyke ls vufHkK Fksog vufHkK g\$ bl fy;sHk;Hkhr g\$ /kkS [kk;sgq gSa bl ht gu+hej vwch;r] ekufld :i ls Hk;Hkhr gksadk Qy gSfo og gj u;hphtt+dks lhus lsyxkyusdsfy;scl bl fy;sr ;;kj gkst krsgSafd og u;hgS gkykfd vxj og rfud Hkh /;ku nasks;g ckr [kq t k;sfd ;g t +ekukls ksb vkSj VDukykt hds t jh;st gkagekjsfy;scjdr sayk;k g\$ ogha cyk;saHkh yk;k gS lkbU vxj gekjsfy;scjdr vkSj ekafydrk ykjghgSrkscyk;sav kSj cok Hkhykjghg\$ lkbU usvxj bUlku dksv kxsc<+k;k gSrksblhlkbU dh ghcnksyr bUlkukadhr[kchl ykfg;r] fo/ka dkjh {kerk] eaHkhc<+kSrjh gqbZ gS lkbU ds}kjk bUlku vl hfer Åpkb;kard igqpk gSrksblhds}kjk ifLr;ka eaHkh fxjk gSA

vUrnf"V okyk eqyeku t +ekusds/kkS&cV+s dk f'kdkj ughagS bl hfy;st c mldslkeusl oky vkrk gSfdlle; dslkFkgkys;kmllsfoeqr gkst k;s rksml dk tokc gks kgSfd le; rq ij gkfde ugha rq le; ij gkfde gksA t +ekuk bUlku cukusokyk ugha bUlku t +ekuk cukusokyk gSA le; bUlku dks ughacukrk] bUlku le; dkscukrk gSA tkuoj vkSj bUlku eav Urj gh;g gSfd tkuoj le; dsv/khu gS bUlku le; dkvf/kdkjh gSA t +ekuk bUlku dks ughacnyk djrk;g [kq t +ekusdkscnykdjrk gSA bUlku t +ekusdh ;k=k&fn'kk eacnyko djrkjgrk gSA ;g ckr vyx gSfd dHkh ;g cnyko HkykbZdhvkSj gks kgSrksdHkh cqjkbZdhvkjA dHkh jpukdhvkSj gks kgSdHkh fo/oa dhvkSj bl fy;sgekjk/keZgSfd ge viusfo'kSrk&n;d xqk;v+hcqf) lsdHkhgkFk u mBk;sgfxZ +nLrcjnkj u gksA ge'kkv kSj k[kq hj[ka vkSj ;g lkp fopkj djrsjgsafd ubZ bZ kngks;kubZ lkp ;k u;k fopkj bl dk :[k+ fd/kj g\$ bldh ;k=k&fn'kk fd/kj g\$;k=k&fn'kk HkykbZdhrjQ+ gkS fuekZk dhvkSj gksrksc l ;ghaughfd mlsLohdkj djyacfYd mldsQSykuseaennxkj cuaA ;k=k&fn'kk cqjkbZdhrjQ+ gkS fo/oa dhrjQ+ gksrksek= ;ghughafd mldksjnn dj nacfYd mldsedkcysdsfy;s MVdj [kMs+ gkst k;aA

bl ef}y+ rd igqp dsLokHkkfod :i ls;g loky iSnk gks kgSfd og eu ;+kj D;k gksk] ekun.M D;k gksk ftlds fygkt +ls QSlyk fd;k tk lds fd le; dhdkSlhbZ kn] dkSlkcnyko] dkSlku;k ut fj; vkSj jpuk vkSj fodkl dhfn'kk eagSvkSj dkSl hbZ kn] dkSlkcnyko] dkSlhfopkj/kkjk fo?Vu vkSj iru dhfn'kk eagSvkSj bfUgjkQ+ dhvFkokiFk lsfoeqr gkst kusdhgSA ;r j[krkgSA

bYe o vDy+ [kkS&,&egt vkSj gokj gol] uQl+ ijlrh 'kj&,&egt +gSav FkkZ~ cq) vkSj Kku fo'kq :i lsHkykbZvkSj ykHk ykyp] dkeyksyqrk] fo'kq :i lscqjkbZgSA bls,d mnkgj.klsle>usea lqfo/kk gksxhA

desVhfoKku dh,d 'kk[kk g\$ bldsfodkl

l sbZa kfu;r dks tejnZr yKHk igq¡pk, dkerh nok;sa bZ kn gbZft l l scheKfj; k¡ dke we sa vk;hA bU ku dh vk;qnj ¼vk;Sr me½ esa c<ksÙkjh gbZ cgq l hrdyhQsa l sutkr feyhA ; g izfr c'kfd fo'kq foKku dh izfr gSA [kkfyl l kbUl dk dkjukek gSA exj jl k;u foKku dh bl hi zfr dk ,d : [k ;g Hkh gSfd ,d ykHkk vk; ykp dk f'kdkj dke ykyp Q fDr vkxsc<+k vkSj ml usbl h l kbUl l s yKHk mBkdk s^^fgjksu** bZ kn dj yh] ft l dk u'kk l cl sft +knk ;kruknk;d ekuk tkrk gSA bl dk vkfn h enZgks;k vkSjr gj plt +nks ij yxkdj bl dh ,d [kjwkd gkfly dj yus k pkgrk gSA fdruh ft Unfx; ka gSt ksbl uscjckn dj j[kh gSA l kjh nfu;k esA fgjksu dh bZ kn Hkh l kbUl usgh dh gSexj ;g bZ kn l kbUl l } fo'kq l kbUl l siSk ugha gbZA ;g iSkb'k feykoVh l kbUl cfYd dk;sh vkSj xyke l kbUl dh iSkokj gSA og l kbUl t ksdke ykyp ¼ksdsgkFkksaea d S gS mudh xyke gSA

fQft dy l kbl dh ,d nwl jh 'kk[kk gSA bl l kbl esa jkSkuh dh gdhdr eqnrkal st kuh t kjh FkhA Hkkfrd foKku esa izfr gbZrks ^^izdk'k** Lor% jkSkuh esa vk;kA fNi sHkksksa l si nZmBsrks dSejk bZ kn gq k] rLohjsa f[kpusyxhA izfr vk;S c<+hrksfQYesa cuusyxhA bu bZ knksa l sbUl ku dh dk;Zkerk esa c<ksÙkjh gbZA vi uZ yKHk iklr gq kexj vpkud ,d /kui 'kqmB [kMk gq k vk;S mlusbl bZ kn ds }kjk vf'y"V fl usekfQYesa cukuk 'kq dj nhA fl usekm|ksx LFkkfir gksx;kA bu fQYeksa esa dshm gSA ;r ;kSu (SEX) dh nhx;h tksbUl ku dh l cl sMh det ksjh gSA urht k ;g gq k fd fQYe cukusokysdj ksMk +fr gksx;svkSj fQYe ds 'kkSdhu vkfFkZ vkSj uSfrd nf"V l s fnokfy; k gksx;sA

vkbUVju us^^ ,Ve h rkdr** ¼ijek.kq 'kfDr½ dk vkfo"dkj djdsbUl ku dh {kerkvksa dks tehu l s vkdk'k esa igq¡pk fn;k exj [kq vkbUVju mu l ekjksgksa esa jksk ;jksfn;k tksmldsl Eeku esa gq FksA og jksk gS bl ij fd vxj mldk evyyu gksk fd mldk vkfo"dkj bUl ku ds gkFkksa ^^,Ve ce** ,s k gfFk;kj nsnsxk rksog bl vukoj.kl s ckt +gh jgrkA ijek.kq 'kfDr dk vukoj.k fo'kq vkSj LorU= l kbl dh rjDdh dk dkjukek gSvkSj ,Ve ce dh bZ kn esa ykyph /kwrZ eDdkj] ekuorkds 'k=q jktuhfrKksadh efyPN Hkkouk vksadk fo"k ?kqyk gq k gSA ;g dke Hkh l kbUl dk gSexj LorU= l kbUl dk ugh] ml l kbUl dk gSft l dsi kao esa cMh +i MhagbZ gSt ksckUnh gS nkl h gSA

ifjfLFkfr ;g gS vkt dk uvj.k ;g gSfd vkt dk tekuk l kbl dk gS vkt l kbl ds 'kkl u dk nkSj gSA exj okLrfodrk ;g gSfd ;g nkSj l kbl dh gqdwer dk ugha ml dh xqykeh dk nkSj gSA

vkt l kbl dSlh rksgSgh cpkjs cMs&cMs+ l kbaknk; Hkh eqtrfdy + igjsapkSdheajgrsgSafd mudk Kku nwljksa rd u igq¡pusik;sA bZ knksa dk ifrQy vkfo"dkj dksa dks oSkgh feyjgk gSt Ssml ijEijkxr esa e;ekj dks feyk FkkA ft l usfdl h ckn'kkg dk egy cuk;k FkkA ml si zfrQy ;g feyk Fkk fd ckn'kkg l yker usml dsgkFk dVok fn; sFksfd fdl h nwljs ds fy;s,s k egy u cuk l dsA ml dk buvke gkFkksa dk dVk t kuk FkkA ;gk¡ buvke fxjQ¶rkjh vkSj d S gSA gn ;g gSfd fudV l EcfU/k;ksa l sHkh vkt kn eqykdkr dh btkt r ugha gksh fd dgha dksbZ oSKkfud Hksn xSjksa rd u igq¡p tk;sA

l kjkak ;g fd l kbl dh gh bZ kn] nok;sa Hkh gSaghjksu Hkh ¼l kbl gh dh bZ kn dSa jk Hkh gS vkSj vf'y"V fQYesa Hkh½A l kbUl gh dk dkjukek ^^,Veh rkdr** dk vukoj.k Hkh gSvkSj ^^,Ve ce** HkhA exj bu esa igys crkbZ x;h plt sa 'kq l kbl] Lok/khu l kbl dk Qy gSvkSj vkf[kj esa crkbZ x;h plt sa feykoVh l kbl dk urht k gSA bLyke dgrk gSfd gj og plt + t ksLorU= vkSj 'kq l kbUl dk Qy gksml sy sy ksa cfYd ml sQSykvksa vkSj gj og plt +t ks vkyeuk l kbUl dk urht k gS ml s jnn djksa cfYd ml dseqdkcys ds fy;s [kMs gks t kvksa rkfd bUl kuh rgt hc o rennq] ekuoh; l H;rk ,oa l aLdfr dk l Qj+ Bhd fn'kk esa jgsA foeku] ekrk u iSkgksa si k;sA bUl ku Åapkb;ksa esa t k; sujpsu fxjsA

foKku dh gh ,d 'kk[kk euksfoKku ¼uQ+fl;kr&Psychology) Hkh gSA bl euksfoKku us bUlku dks cgqr dqN crk;k] cgqr dqN fl[k;k gSA bl ds dbZ 'kqcs gSa] dbZ lEHkkx gSaA ftuesa ls ,d ds }kjk bUlku ds fnekx+ dks i<+k tk ldrk gSA ... bUlku ds fnekx+ dks i<+us dk fo"k; gSA

foKku dh gh ,d 'kk[kk euksfoKku ¼uQ+h;kr&Psychology) Hkh gSA bl euksfoKku us bUlku dks cgqr dqN crk;k] cgqr dqN fl[k;k gSA bl ds dbZ 'kqcs gSa] dbZ lEHkkx gSaA ftuesa ls ,d ds }kjk bUlku ds fnekx+ dks i<+k tk ldrk gSA bl dk mi;ksx bZykt ds fy, fd;k tkrk gSA vkt og h rjhds+ viuk ds og ckras tks cPpksa dks eghuksa esa fl[kk bZtkrh Fkh og ?kUVksa vkSj feuVksa esa fl[kk nh tkrh gSa; g fo'kq) euksoKkfud dhfrZ gS] [kkfyl uQ+lh;krh dkjukek gSA exj LokFkhZ yksHkh] /ku&nkSyr ds iqtkjh] lRrk iwtd vkSj dkeyksyqi] vius ykHk&ykyp dh laqf"V ds fy;s] /ku cVksjus ds fy;s] 'kklu djus ;k mls cuk;s j[kus ds fy;s] iz'kkl.k] izpkj&izlkj esa blh euksfoKku ls dke ys jgs gSa vkSj lekt dks rckgh ds xM<s esa <dsy jgs gSaA igys lwjr euksfoKku dsBhd fn'kk esa lQ+j djus dh gSA nwljh xy+r fn'kk esa lQ+j djus dhA

vkt ds nkSj esa ftl rjg fuR; fnu dksbZu dksbZ ubZ bZtkn lkeus vkrh gS] mlh rjg fuR; fnu ,d u;s fopkj] ,d u;s Q+Sklu] ,d u;h fopkj/kkjk ls lEcaf/kr gksrh ikVh+ k gS] HkkSfrd bZtkn dks;k uoopsu k;k vk/kqfud nf"Vi.kZ bl ds Lohdkjus cfYd Q+Syk us ;k jnn~ djus cfYd feVkus ds fl yfl ysa esa og h fl) kUr dke djrk jgrkA 'kq) Kku&foKku gks rks Lohdkj djys vkSj Q+S;ksa vkSj ykyp dke yksHkrk] ljdkj ijLrh] /ku iwtk dh feykoV fn[kk;h nsrk s jnn~ dj nsa cfYd mlsfeVkus dk iz;Ru djsa vkSj fopkj vkSj nf"V ds ckjs esa ge dks cgqr vf/kd gksf'k;kjh dh t+:jr gSA D;ksafd xyr fopkj/kkjk dh dkV ^^;Vece** ls dgha vf/kd gqvk djrh gSA bl ds fy;s cgqr vUrjkRek ds idk'k] iSuh nf"V vkSj /kS;Z lesr ekul dh vko';drk gSA ;g rHkh lEHko gS tc ge ^^nhu** ds Bhd ifgpkuus okys cu tk;sa mlh dh vkRek esa mrj tk;sa vkSj lkFk gh lkFk le; ds gky&pky vkSj #[k+ dk Bhd&Bhd vUnkt+k fd;s jgsA



¼cfd ;k is 6 dk----------------------------------½
को चूम लिया और शैख मुह्युद्दीन इब्ने अरबी की किताब "महाज़रतुल अबरार" में इब्ने यज़ीद की रिवायत है अपने पिता से कि एक आराबी (अरब का बपवासी) रसूल[स] के पास आया और एक चमत्कार की मांग की। उस चमत्कार को देखने के बाद कहा या रसूलल्लाह[स0] मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपके हाथ और पाँव को चूम लूँ। आपने[स] उसे आज्ञा दे दी। फिर उसने कहा अब मुझे आज्ञा दीजिए कि आपको सजदा करूँ आपने कहा नहीं। किसी को किसी का सजदा नहीं करना चाहिए। या तो प्यार के कारण चूमा जाता है या आदर के कारण किसी भी प्रकार इसको शिर्क कहना या निशिद्ध कहना दोनों ग़लत हैं। **tkjh---------------------------**

engs
beke t+Sug vkcnhu v0

gLlkuy fgUnh ekSykuk lS;n dkfey gqlSu udoh
^dkfey* tk;lh

vCcykls vol rks vkf[kj+ gS egEen rq esa
vYykg vYykg ;s dlj r Hkh gS ogn r dsfl ok
Hkj fn;k nkeus lk,y dks fl ok nkeu ls
vkSj tkfgj u fd;k viuh funker dsfl ok
ckr bUlkQ+ dh ;s gS fd il s dRy s gq, S
dkS ;wl keus vkrk rjh fgEer dsfl ok
nLrs uDdk+ks vtj+ [kSa ds rjh rLohj
tSs lc Hkwy x;k gks rjh lwjr dsfl ok
;s gdhdr+ ugha gS vUnkt+ s r yc gS ekSyk
bZe gj 'kSdk rEgasa gS ejh gkyr dsfl ok
okg ,sl ,; ns lTtkn ds nkeku s dje
vkl ek;rsa u gks rjh ojv r dsfl ok
lcs vLon dks xokgh is tek; feyrh gS
oks Hkh gks k gS tks dgyk rk gS fd Hker dsfl ok



oDQ+cpko vkUnksyu vkS dk;nsfeYyr ekSykuk lS;n dYcs tokn udoh

vtknkjh rgjhd dh dke;kch ds ckn dk;ns feYyr ekSykuk dYcs tokn udoh lkgc us oDQ+ lEifRr;ksa dh cgkyh dk vkUnksyu 'kq fd;kA ftldh otg ls cgqr lh oDQ+ lEifRr;k¡ dkS dks gkfly gqbZ vkS cgqr ls [kLrk gky beke ckM+ksa dh ejEer gqbZ bl dh flQZ dqN felkysa uewus ds rkSj ij fuEufyf[kr gSA

¼1½ beke ckM+k flCrSukckn fLFkr gtjr xat y[kuÅ dks ,d e'kgwj cnek'k ds dCts ls okil fy;k ftl dh [kwcl wjr btekjr vkt 'k;ku dsifkl gSA

¼2½ oDQ+ lTtknh; k dh 20 chA?k tehu ,d bUrgkbZ [krjukd ekfQ;k ds pxqy ls vkt kn djk;k tks gkfd lh dks dHkh j[kus dh fgEer u gksh Fkh vkt ogk¡ f'k;ksa ds rhu lkS ifjokj vkckn gSa 74 DokVlZ cYdqy fu/kZu yksxksa ds fy, fuekZk gq gSa vkS ,d VSDudy dkWyst ds fuekZk dk dk;Z tkjh gSA

¼3½ oDQ+ lTtknh; k ds beke ckM+s dk iqu% fuekZkA

¼4½ beke ckM+k tkSgjh vkfcnhu tks flQZ [kaMgj Fkk mldk iqu% fuekZk] vkt bl dh [kwclwjr bekjr lcdslkeus gSA

¼5½ dqN o"kksZa igys gtjr xat esa fLFkr oDQ+ lyrur eftys dh bfUrgkbZ dherh tehu fcYMjksa ds gkFk cpp nh xbZ Fkh mlesa ;wih dk lclscM+k ekfQ;k Hkh 'kkfey Fkk bl ds f[kykQ+ fdlh dks ,d 'kCn dgus dh Hkh fgEer ugha Fkh ekSykuk us tejnLr izn'kZu ds ckn og eksgkgak [kRe djok;k ftl ds dkj.k oDQ+ Hkhl ¶gf{kr jgk vkS yk[kksa dh vkenuh Hkh gkss bZ½ gky fd ekSykuk ds dqN eDdkj nqeu bl ckjs esa xyr Qgfe;k¡ Qsykrs gSA½

¼6½ oDQ+ beke ckM+k xqQ+jku evkc dh Hkh cgqr rjDdh gqbZ vkS ;rhe[kkuk yk[kksa dk fnyk;k ^xqQ+jku evkc*¼ijo-vo½ dh ol h;r ds vk/kkj ij gks &, &bfYe¸; ds dh LFkkiuk gqbZ ftl dh nkSeft yk bekjr dk fuekZk gqvk vkS gkWLVy ds fy, nkseft yk beljr [kjhnh xbZA ekSykuk MkWDVj dYcs lkfnd lkgc ds eqoYyh dk;ZdkyvksaesavkSd cM+s gSVl xsEs;sFkA

bl tehu ij ,d fpfdRlky; dk fuekZk gqvk fuekZk esa bl ckr dk [k;ky /;ku j[kk x;k fd bl fpfdRlky; ds uhps dcksa ds fy, txg ckdh jgs ckn esa ogk; dcaze cuha Hkh] ftlds flyflys esa ekSykuk ds gkfln xyr vQokgsa Qsykrs jgrs gSaA

beke ckM+k xqQ+jku evkc esa yMfd;ksa ds enjls dh LFkkiuk dh ftlesa lSls vf/kd vkSjrsa bLykeh f'k{kk x.kdj jgh gSA

bu rekke miyfC/k;ksa esa [kq ekSykuk us viuk t fj, ls dkjksokj:i;s [kpZ fd;sA gdhdr ;s gS fd ekSykuk dks oDQ+ ls dksbZ Qk;nk ugha cfYd ekSykuk dh tsc ls oDQ+ dks Qk;nk gSA

ekSykuk pkgs tks nksa ds fy, gj oDr rS;kj gS 'krZ ;s gS fd dkuwuh rjhds ls ,DV eantwj gksa og b[kfr;kj fd;s tk;sA mudk rks ;g rd dguk gS fd vxj u;k eqoYyh btkunkj hl sdke djs rks og mldh Hkj iwjh enn Hkh djsaxsD;ksafd dkSe dh f[kner ds fy, eqoYyh gksuk 'krZ ugha gSA ekSykuk us ,ylu fd;k gS fd mudh gj dke;kch esa dkSe dh Hkj iwj enn vkSj dqckZu;k¡ 'kkfey gSa dkSe us mudh vkokt +ij ges'kk yCcSd dgk] dqckZu;k¡ nha ;gk¡ rd fd ,d enZ eksfeu us viuh tku dqckZu dj nh exj dkSe ds dqN xn~nkj vkSj cbZekus ykyp ls kjhe s gqrs jgs vkSj dqckZu;ksa dks cjckn djuk pkgrs gSa vkS ,d rkdr oj eqyeku esa h dsb 'kkjsai j dkSe dks uDlku igqpkjgs gSaA es hvkS mldspepksa dh lcls [krjukd lkft 'k ;s fd ;ko lquhoDQ+ ckMZ dks ,d djuk gSA gekjs bl ys[k dk edln ekSykuk dh f[kner ksa dks fxuokuk ugha gS cfYd edln ;s gS fd vxj fd lh uk Qgeh dks xyr Qgeh gks ;h gks rks mls rd lPpkbZ igqp tk;sA

feut kfuc %

iBukjh dk;ky; eft fyl smy ek&,&fgUn] y[kuÅ